ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–५८
दिनांक– शुक्रवार, २८ जुलाई, २०२३

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 35.9 एवं 25.9 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 84 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 58 प्रतिशत, हवा की औसत गति 5.5 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 4.5 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 5.8 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 40.5 एवं दोपहर में 31.3 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में वर्षा नही हुई।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(29 जुलाई–02 अगस्त, 2023)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 29 जुलाई–02 अगस्त, 2023 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के जिलों के आसमान में हल्के से मध्यम बादल छाये रह सकते है। इस अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में वर्षा की सक्रियता में हल्की वृद्धि हो सकती है। हालांकि वर्षा, सामान्य से बहुत कम होने की सम्भावना है। 30 –31 जुलाई के आसपास उत्तर बिहार के अनेक स्थानों पर हल्की–हल्की वर्षा हो सकती है। तराई के एक–दो स्थानों पर मध्यम वर्षा भी हो सकती है।
- अधिकतम तापमान 36 से 37 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 65 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 9 से 14 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से पूरवा हवा चलने की सम्भावना है।

• समसामयिक सुझाव

- धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 2–3 दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500–600 लीटर पानी मे घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत में एक से0मी0 पानी की उपस्थति रहनी चाहिए।
- उचॉस जमीन में अरहर की बुआई यथाशीघ्र समाप्त कर लें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलो नेत्रजन, 45 किलो स्फुर एवं 20 किलो पोटाश तथा 20 किलो सल्फर का व्यवहार करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय–13, राजेन्द्र अरहर–1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशंसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से0मी0 रखें । बीज दर 18 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें।
- खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद, 60 किलोग्राम नेत्रजन, 80 किलोग्राम स्फुर एवं 80 किलोग्राम पोटाश के साथ 20 किलोगाम सल्फर का व्यवहार करें। प्याज के पौध की रोपाई के लिए खेतो को समतल कर छोटी–छोटी उथली क्यारियाँ बनावें, जिसकी चौड़ाई 2 मीटर एवं लम्बाई 3 से 5 मीटर तक रख सकते हैं। प्रत्येक दो क्यारियो के बीच जल निकास हेतु नालियाँ अवष्य बनावें। जिन किसान भाई का प्याज का पौध 45–50 दिनों का हो गया हो वे पाँक्ति से पाँक्ति की दूरी 15 से0मी0, पौध से पौध की दूरी 10 से0मी0 पर रोपाई करें। पिछात बोयी गई प्याज की पौधशाला में नियमित रूप से कीट एवं रोग–व्याधि की निगरानी करतें रहें। स्वस्थ एवं सुडौल पौध के लिए पौधशाला से खरपतवार को निकालते रहें।
- मिर्च का बीज उथली क्यारियों मे गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च–3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0–267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
- आम के पौधों की उम्र (10 वर्ष से अधिक) के अनुसार फलन समाप्त होने के बाद अनुशंसित उर्वरको जैसे 15–20 किलोग्राम सड़ी गोबर की खाद, 1. 25 किलोग्राम नेत्रजन, 300–400 ग्राम फॉसफोरस,1.0 किलोग्राम पोटाश, 50 ग्राम बोरेक्स तथा 15–20 ग्राम थाइमेट प्रति पौधा प्रति वर्ष के अनुसार उपयोग करें। जिससे अगले वर्ष पौधे फलन में आ सकें तथा उनका श्वास्थ अच्छा बना रहें।
- आम का साटा तथा लीची, अमरूद एवं नींबू की गूटी तैयार करें। फलदार एवं वानिकी पौधो को लगाने का यह समय उपयुक्त चल रहा है। किसान भाई अपनी पसंद के अनुसार फलदार पौधें का बगाान जैसे– आम, लीची, कटहल, ऑवला, अमरुद, शरीफा, नींबु की रोपनी करें। वानिकी पौधो जैसे– सागवान, चह, हरा सेमल, देशी सेमल, सफेद सिरीस, काला सिरीस, अर्जुन, गम्हार, गुलमोहर की रोपनी करें।
- पिछले माह बोयी गई साग–सब्जियों की निकाई–गुराई करें। सब्जियों की नर्सरी में लाही, सफेद मक्खी व चूसक कीड़ों की निगरानी करें। ये कीट विषाणु जनित रोग फैलाते है। इन कीट का प्रकोप दिखाई देने पर बचाव के लिए इमिडाक्लोरोप्रिड दवा का 0.3 मी.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर छिड़काव करें।
- बैगन की फसल में तना एवं फल छेदक कीट की शुरुवाती रोक–थाम के लिए बैगन की रोपाई के 10 दिनों बाद 1 ग्राम फ्युराडान 3 जी0 दानेदार दवा प्रति पौधा की दर से जड़ के पास मिट्टी में मिला दें।
- इस मौसम में लत्तर वाली सब्जियों जैसे नेनुआ, करैला, लौकी, और खीरा में फल मक्खीयों से होने वाले नुकसान में बढ़ोत्तरी हो जाती है। सर्वप्रथम फल मक्खी से क्षतिग्रस्त सब्जियो की तुराई कर गड्ढे में दवा दे। इससे बचाव हेतु मिथाइल यूजीनोल ट्रेप का प्रयोग करें।

आज का अधिकतम तापमानः 35.5 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 2.6 डिग्री सेल्सियस अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः 25.9 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 0.6 डिग्री सेल्सियस अधिक

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी (कृषि मौसम)

(डॉ0 ए. सत्तार)
वरीय वैज्ञानिक सह नोडल पदाधिकारी (कृषि मौसम)